

Paradevati 58 (Amapur eldial)

युवाभ्यायर्थाङ्गकियी असनाय २ हदि ॥ युवाभ्यायर्थाङ्गकियी
युवाभ्यायर्थाङ्गकियी असनाय २ ॥ युवाभ्यायर्थाङ्गकियी
युवाभ्यायर्थाङ्गकियी असनाय २ ॥ युवाभ्यायर्थाङ्गकियी
युवाभ्यायर्थाङ्गकियी असनाय २ ॥ युवाभ्यायर्थाङ्गकियी
युवाभ्यायर्थाङ्गकियी असनाय २ ॥ युवाभ्यायर्थाङ्गकियी
युवाभ्यायर्थाङ्गकियी असनाय २ ॥ युवाभ्यायर्थाङ्गकियी
युवाभ्यायर्थाङ्गकियी असनाय २ ॥ युवाभ्यायर्थाङ्गकियी

आभ्यायर्थाङ्गकियी

2239

I

ASHA

नृश्रावणगणिकमलासनाय २॥ वातुसथानिवाय ॥ काच
लार्थन ॥ मूलयलयाव बुद्धालुखलुसंरुत मलववसस
रुव ॥ आयुविर्नमहावात ॥ यीयुवनसमावह ॥ संस्काच
मूलननिर्नीकृष्ट ॥ अस्मयुद ॥ नादन ॥ अस्मयुद
सखनसाय ॥ इकववाय ॥ अवेवुं ० न ॥ ववमूडाक

न डोडीकुर्वस ॥ मीनमूडानकापूर्याय ॥ मनु ॥ दीर्घीव
अमृत् २ अमृत्ताद्रव अमृत्तवमिलो ॥ दी अमृत्तं आवय २
मो ४ सूक्ष्मगुक्त ॥ अयायविभावय चर चलायेना सिद्धिसाम
॥ यविर्नकृत् २ मरुखिचमीमूडी ॥ अकटय २ इ ३ रुट स्वाहा
॥ वन ॥ यानिमूडी ॥ मूलनजव १० ॥ दाकायाव नयोनीव

सुसंगर्भलयाय ३ ॥ आनन्दरुचिवाय रुढ ॥ आनन्दरुचि
वोवोषट ॥ नृत्तिसंस्कृत ॥ धर्ममार्गस्य सुचरुतर्पणलयाय ॥
कुं यनजिवादि सुचरुतर्पणायामि ॥ दिद्योद्य सुचरुतर्पणायामि ॥
सिद्धोद्य सुचरु ॥ मानवोद्य सुचरु ॥ यनमसुचरु ॥ यनमसि सुचरु ॥
यनमावाय सुचरु ॥ यनात्यन सुचरु ॥ स्वसुचरुतर्पणायामि ३ ॥

हृदयस्य मूलनमानसीयूजा १० ॥ किञ्चिदुद्यमयास्य ॥ १ ॥
ननायी ० यूजा ॥ कीर्ती आभनगकथनमश ॥ २ मूलप्रकृत्यै
२ ॥ २ मलुकाय २ ॥ २ ककुयाय २ ॥ २ अननाय २ ॥ २ वनारु
य २ ॥ २ वृषिद्यै २ ॥ २ वामुवृचवाय २ ॥ २ अमृतसागनाय २
॥ २ नलदीयाय २ ॥ २ स्वर्णुदय २ ॥ २ सुमलुयाय २ ॥ २ वृक्ष

सुद

यु नाय २ ॥ २ दिव्य यु नाय २ ॥ २ बुद्ध यु नाय २ ॥ २ वीथ्य
यु नाय २ ॥ २ सदा निव यु नाय २ ॥ २ विमल मुद्रा न स्नाना
दाव दवी आवाहन याय ॥ मूल य लया व महा य द्रव ना
न ४५ काचल नन्द विग्रह । सर्व कृत्त हिन मान व ऊदिय
वद व न ॥ २ सिन्धु ल सानि श्री कृत्त २ साहा ॥ ॥ थना नद

संस्कृत ॥ ०० सा ग क ग क आवा सु ॥ ०० ह नि ह २ आवा व
यय ७ ॥ ०० ह स नि दि ना रु व २ ह दि स नि धाय ॥ ०० ह स नि
बुद्धा रु व २ कृत्त स नि वृत्त ॥ ०० व मु ८६ न स वृत्त धाय ॥
अमृती कृत्य निव नि ॥ स मृखी कृत्य ॥ थानि मृदा सकली
कृत्य ॥ महा मृदा या य वमी क व ली कृत्य ॥ ०० ति न व संस्कृत ॥

॥ वागवनिष्टा ॥ त्रैलोक्यं श्रीं क्रीं हंसं साहं स्वाहा ॥
 मूलं न १० ॥ ध्यानं ॥ वालाकर्मलुलासासी चतुर्धा जिलावनी
 । यागं कुं गगनां श्रवणं धनयनीकुजासाहं ॥ दवीयात्रं गवतं
 गन्धासयाय ॥ जियाजलि ३ नयनयाय ३ ॥ धनावाजाय वा
 च, वृजायाय ॥ मूलमंजयलयाव सकलजिनी ॥ श्रीमहावि
 स्थानहाव ॥ दवीसिरुकिरुवरु यविवा न समान्वेन । यावत्तु यजुषि

गोपविश्वसिद्धिनाम

यूनसुन्दर्यो वाद्यं नमः ॥ अर्धं नमः ॥ आवमनीयं २ ॥ स्नानं २ ॥
 वंदनं २ ॥ सिद्धं २ ॥ अर्द्धं २ ॥ वृष्यं २ ॥ धीयं २ ॥ नैव
 द्यं २ ॥ यूनचावमनीयं नमः ॥ श्रुजलि ३ ॥ नयन ३ ॥ ॥ धना
 अनुसकाय ॥ सन्निभययवदवि यचासृत्तवनूषिय ॥ अ
 नूदी जियूनददि यविवाचाच्चनायम ॥ त्रैलोक्यं समस्तु फ
 र्कट

पुष्पगवसंयुदाय कूलकोलनिगर्जवदस्यवदस्यानिवदस्यय
वायववदस्ययानिनीरु ४थी यादुकाशानमः ॥ वाउगनिय
यूजनं ॥ नंकीं श्रीकामश्वचीनित्याणी यादुकां पूजामि नय
यामि ॥ ३ श्रीकामश्वचीरुगमालिनीनित्याणी ॥ ३ ॐ रुगमालि
नीनित्यकिन्नानित्याणी ॥ ३ ॐ रुचरुणित्याणी ॥ ३ उं वद्विवा

सिनीनित्याणी ॥ ३ उं मरुविश्वश्वचीनित्याणी ॥ ३ अं निवदूनीनि
त्याणी ॥ ३ मं त्वनिनित्याणी ॥ ३ ॐ कूलसुन्दरीनित्याणी ॥ ३ ॐ
नित्यानित्याणी ॥ ३ उं नीलयताकिनीनित्याणी ॥ ३ उं किजयानि
त्याणी ॥ ३ उं सवर्मगलानित्याणी ॥ ३ उं कालामालिनीनित्याणी
३ अं विविशानित्याणी ॥ ३ अं २ त्रियुनसंदरीनित्याणी यादुकां पूज

यामिनर्पयामि ॥ ॥ गु^यर्भुकि पूजनं ॥ ^{नि}कौंशो यचनानन्दनाथः
पादकौपूजयामिनर्पयामि ॥ २ यचयुक्ताग्नानन्दनाथ ॥ २ यच
गङ्गाम्बा ॥ २ कलेश्वरानन्दनाथ ॥ २ कामेश्वर्यम्बा ॥ २ कोल
ेश्वरानन्दनाथ ॥ २ नकानन्दनाथ ॥ २ विविशानन्दनाथ ॥
२ समयानन्दनाथ ॥ २ सहजानन्दनाथ ॥ २ गगनानन्दनाथः

॥ २ विश्वानन्दनाथ ॥ २ विमलानन्दनाथ ॥ २ मदनानन्दनाथ
॥ २ भुवनानन्दनाथ ॥ २ लोचनानन्दनाथ ॥ २ प्रियानन्दनाथ ॥
२ श्रानन्दानन्दनाथ ॥ २ अवलाम्बागकि ॥ २ पूरुषानन्दनाथ ॥
२ आत्मागकि सर्वानन्दनाथ ॥ २ यचुकि यागनन्दनाथ ॥ २ श्र
मृगानन्दनाथ पादकौपूजयामि नर्पयामि ॥ ॥ ७ ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः वल्लभा वासहि नया इका ॥ वामगंगाया ॥
ॐ श्री वैवस्वत नाथ वल्लभा वासहि नया इका ॥ दक्ष ॥ २०१ कामद
वाय नय वासहि नया इका ॥ गलस्य वाम ॥ २०२ वसन्त षोडश
हिताय या इका ॥ वदका रुच ॥ ॥ वदका रुच ॥ ॐ श्री चतुर्वर्ग्यादि न
स्वाय २ ॥ ॐ श्री अलिमासिद्धि या इका युज्यामि नय्या मि ॥

यन्त्रिमहा न ॥ २०३ अलिमासिद्धि या ॥ २०४ रुच ॥ २०५ अलिमासिद्धि या ॥
युव ॥ २०६ कामासिद्धि या ॥ दक्षिण ॥ २०७ अलिमासिद्धि या ॥ २०८
वायव्य ॥ २०९ अलिमासिद्धि या ॥ नैऋत्य ॥ २१० अलिमासिद्धि या ॥ अ
ध ॥ २११ अलिमासिद्धि या ॥ २१२ रुच ॥ २१३ अलिमासिद्धि या ॥ २१४ रुच
या ॥ २१५ अलिमासिद्धि या ॥ २१६ रुच ॥ २१७ अलिमासिद्धि या ॥ २१८ रुच
या ॥ २१९ अलिमासिद्धि या ॥ २२० रुच ॥ २२१ अलिमासिद्धि या ॥ २२२ रुच

[illegible]

धा॥ २ अं ॥ संहारणे नव अ॥ मलाल द्वा दद्याम्या धा या न॥
 चतु चम्रासु नखाये नम ॥ १॥ जां धां डां सर्वसं कोहि नीमूडा दवी धी
 ॥ २॥ डां सर्व विडा विहा मूडा दवी धी ॥ २॥ क्रीं सर्व कर्षणी मूडा द
 वी धी ॥ २॥ यूं सर्व वण क्री मूडा दवी धी ॥ २॥ स॥ सर्व नादि नीमूडा
 दवी धी ॥ २॥ कों सर्व मला क्री मूडा दवी धी ॥ २॥ डां सर्व निखलु

मूडादवीणी ॥ २००॥ सर्वस्ववनी मूडादवीणी ॥ २००॥ सर्ववी
मूडादवीणी ॥ २००॥ सर्वशानि मूडादवीणी ॥ नायिका ॥
अं अं सो विपु नानित्याणी ॥ एता १५ कट याजि न्यस्ये ला कु मा
दुर्नवकु संयुजिता ४ संतु नयिना ४ संतु ॥ ३००॥ सर्वसंकाहिनी मू
डी ॥ १॥ ॥ ३००॥ वाउग दलय द्वा सनाय २ ॥ ३००॥ अं कामा

कर्वली नित्या कलाणी यादू कां ॥ २००॥ अं वृद्धा कर्वली नित्या क
लाणी ॥ २००॥ अं दं का वा कर्वली नित्या कलाणी ॥ २००॥ ग वृद्धा क
र्वली नित्या कलाणी ॥ २००॥ अं वृद्धा कर्वली नित्या कलाणी ॥ २००॥ वृ
या कर्वली नित्या कलाणी ॥ २००॥ अं वृद्धा कर्वली नित्या कलाणी ॥ २००॥
गं वृद्धा कर्वली नित्या कलाणी ॥ २००॥ वृद्धा कर्वली नित्या कलाणी ॥

२६० व्योम्नि कर्षणी नित्या कलाणी ॥ २६१ स्मृत्या कर्षणी नित्या
कलाणी ॥ २६२ तामा कर्षणी नित्या कलाणी ॥ २६३ वीजा कर्ष
णी नित्या कलाणी ॥ २६४ आत्मा कर्षणी नित्या कलाणी ॥
२६५ अमृत कर्षणी नित्या कलाणी ॥ २६६ अमृत कर्षणी
नित्या कलाणी यादृकी ॥ २६७ यदि वामादहं न ॥ २६८ सोऽपि

यूवणी नित्याणी यादृकी ॥ २६९ अमृत कर्षणी नित्या कलाणी ॥ २७०
वर्क संयुक्ता ॥ २७१ संयुक्तार्थिना ॥ २७२ ॥ २७३ सर्वविदा वली मूर्धा ॥ २७४
॥ २७५ अमृत दलक मलाय ॥ २७६ अमृत ॥ २७७ अनन्य कसूमाद
वीणी ॥ २७८ अनन्य मखलाद वीणी ॥ २७९ अनन्य मदनाद
वीणी ॥ २८० अनन्य मदनाद वीणी ॥ २८१ अनन्य म

शी ॥ २ वं सर्वोद्ग सुन्दरीदवीशी ॥ २ र्त्त सर्वसौभाग्यदायिनीदवी
शी ॥ नायिका ॥ द्वे द्वौ सोऽखियुनाशीनित्याशी ॥ ७ ताऽकलको
लथागिन्यऽसर्वार्थली साधकचक्रयुजिताऽसंभुतार्थिताऽसंभु
॥ १ सऽसर्वोद्गदनीमूर्त्ति ॥ १ ॥ अष्टकान् वामावर्त्त ॥ ७ ॥
द्वौशी अन्तर्द्वौ दलवकाय २ ॥ २ र्त्त सर्वोद्गदवीशी ॥ २ र्त्त

सर्वगकिदवीशी ॥ २ वं सर्वोद्गयुयुदादवीशी ॥ २ र्त्त सर्वोद्ग
नमयीदवीशी ॥ २ र्त्त सर्वोद्गविनागिनीदवीशी ॥ २ र्त्त सर्वो
अवस्यरूपादवीशी ॥ २ र्त्त सर्वोद्गयदवादवीशी ॥ २ र्त्त सर्वोद्ग
दमयीदवीशी ॥ २ र्त्त सर्वोद्गकवीदवीशी ॥ २ र्त्त सर्वोद्गिन्द
लुपदादवीशी ॥ नायिका ॥ द्वे द्वौ द्वौऽखियुनामालिनीनित्या

वां मां वां मां हां हां ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ कामं ध्यात्वा ॥ २ ॥ ॐ
 मातृनायकं कामं ध्यात्वा ॥ २ ॥ ॐ वल्लभं कामं ध्यात्वा
 यागं य ॥ २ ॥ ॐ सुखं कामं ध्यात्वा ॥ २ ॥ ॐ सुखं कामं ध्यात्वा
 कामं वल्लभं ॥ ॥ ॐ शिवं कामं ध्यात्वा ॥ २ ॥ ॐ सुखं कामं ध्यात्वा
 मित्रं कामं ध्यात्वा ॥ २ ॥ ॐ सुखं कामं ध्यात्वा ॥ २ ॥ ॐ सुखं कामं ध्यात्वा

[illegible]

[illegible]

त्याष्टी ॥ एता नरु त्यानि नरु स्यानि न ॥ सर्वसिद्धिपद वक्तु
 जिना ॥ संतु नरिना ॥ संतु ॥ श्री वीज मूर्ती ॥ १६ ॥ थना वरु नरु
 जा ॥ ॥ श्रीष्टी विन्दु वकाय नमः ॥ श्रीष्टी उक्ती सो ॥ कुंजी सर्वन
 कामय श्रीमव द्वावक्तु उद्या नयी ॥ १० वरु नन्द नृ ॥ नाथ
 त्रिकशा महाजियु नरु दनी दवीय नरु व द्वा लमकि श्रीष्टी वा

श्री
 वीज
 मूर्ती

इका ॥ नायिका ॥ श्रीष्टी श्रीष्टी श्रीष्टी ॥ श्रीष्टी महाजियु नरु नवी निशा
 वक्तु श्रीष्टी या इका श्रीष्टी श्रीष्टी श्रीष्टी ॥ श्रीष्टी वना ॥ श्रीष्टी नाय ना नि नरु
 स्यानि न ॥ सर्वनन्द मथ वरु वक्तु व द्वा श्रीष्टी श्रीष्टी
 श्रीष्टी वना नरु श्रीष्टी ॥ श्रीष्टी जिना ॥ संतु नरिना ॥ संतु ॥ श्रीष्टी ॥ जि
 संतु मूर्ती ॥ श्रीष्टी नि मूर्ती ॥ १२ ॥ ॥ श्रीष्टी श्रीष्टी श्रीष्टी ॥ १० ॥

नमो बलि ॥ ३ वां व दूक नाथा य २ ॥ डीं लीं वूँ अदि द वी यू उ व
दूक नाथ कयिले जटा नाच नासूचि नरु का लामूरु सव विद्या
नाम य २ सव यिवा न सहिता मिमां यू जी वलिं गृ दू २ दू दू दू
हा ॥ अरुष्टा नामिका ॥ दलुमू जी ॥ चक्रा दहिल ॥ ५ ॥ २ गूँ गेल
यन वज वच द सव ज न म व ग मा न य स व दि द्या ना म य २ सव
५३ गै ग ल य न य २

५ ग द म डी

यवा न सहिता मिमां यू जी वलिं गृ दू २ स्वाहा ॥ अंगुष्ठ म ध मा दू ४ ॥
कौं कौं या ला य २ ॥ कौं कौं ४ दू ४ द वी द व यू उ उ वि द्या हा वि स्व मू
न कौं या ल स व वि द्या ना म य २ सव यिवा न सहिता मिमां यू जी व
लिं गृ दू २ स्वाहा ॥ अंगुष्ठ न ऊ नी ॥ न ऊ नी मू डी ॥ ॥ यो था गि नी ॥
शा २ ॥ यो था गि नी शो दू ना धि यानि त्या श्रु ति का ला ता कि नी त्या रुं ला रु

वासिनीश्वरः सर्वविद्यानामयः सर्वविद्यानसहि नामिमीयुजं
वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ कनिष्ठां गुह ॥ यानि मूर्डी ॥ वक्रादाम ॥
मधुमूलवलि ॥ ३ वंकीश्वरः ॥ उड्डुवक्रां गुह ॥ वावुविगगलानलं
निकलं गुह ॥ नलं वा ॥ यानलं वानलं वा ॥ लिलयवनयौ यौगुह
लिमावा ॥ केश्यौ ॥ ० ॥ ययौ ॥ ० ॥ दिवसकृतयदा ॥ ४ यययुवादि

कनः पीतादवा ॥ मदान ॥ गुरुवलि विविनायातुवीचुवन्ध्या ॥
सा ॥ सिद्धवसर्व ॥ अनिविनिनयुजं वलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ कनिष्ठां
॥ मदानियुचसन्धी ॥ कनिष्ठां ॥ ४ सर्वविद्यानामयः २ स
र्ववक्रां कृत २ सर्वविद्यानसहि नवलि गृह्ण २ वंकीश्वरः ॥ ४ रुह
स्वाहा ॥ विखलुमूर्डीयानि ॥ अनासिकागुह ॥ ॥ केश्यौ वलि ॥

वेद्यानत्रयं श्री महाद्यानं श्रीः मूलमालिनी महादेवविष्णुमा
वलिं गुरुं २३ दृष्ट्वा दा ॥ ॥ याथादि गन्धपुष्पपुष्पदीपआवलि
नैवद्यं तालमूल ॥ मूलविद्याः त्रिर्यज्ञसि तर्पण ३ ॥ ॥ मालापूजा
मां मालमहा मायं बहु हर्मिनि यन्महा तस्मात्तं सिद्धिदा हव ॥
यथागच्छि यय ॥ न जयसमर्थन ॥ गुणानि गुणानि दिव
सर्वगच्छि सवृषिणि ॥ २

गृहाण सिद्धिर्न जयं । सिद्धिर्न वदु मदवि त्वं ७५ सादान्महेश्व
री ॥ ॥ ॥ यथाकि ॥ अग्नौ भादि ॥ नमस्तानयाय ॥ वाधना ॥
गद्वद्वमथ सवृद्ध दवि विवृणुद वि । यथागच्छि जयं पूजा
गृहाण वनमथ वि ॥ तर्पण ३ ॥ गीर्थावत ॥ पूजा समर्थनी
पुष्पपूजा कपूजा ॥ पूजाय नि कनायव । नमस्तानवदवसि

स्वमवांत्तं न विद्यत ॥ लीनमूढान् धवकदव् लीनयाय ॥
 त्रैलोक्यमदममन्मसवस ॥ ५ ॥ अत्रुयदुत् ॥ सदानमूढान् वलि
 धय ॥ स्थाननाडुदाववाय ॥ नासिय ॥ निम्नाल्यदवाध्वने
 श्रीनिम्नाल्यवासिन्धे नमः ॥ ॥ अर्घ्यासिवाकलीखवाय ॥ जय
 शिर्डं नय शिर्डं जकिर्डं युजनं मम ॥ सर्वनमश्चिडममु

मास्कनस्ययुगादन॥ जखया वाय॥ ओजानि॥ नृसादि
भय॥ ॥ वृन्निड्द्राप्ताय यनदेवगार्वायद्विः समाया
१ सम्यन १३८ आश्विनकृष्ण द्वादशी हस्तनक्षत्र आदित्य
वानसीपूर्णिमलिखनिमिति यजलक्रु श्री कल्याण देवनवाया
गुरुमुक्तु सर्वदा ॥ ॥ श्री श्री श्री रुवा नीयी निन मु ॥ ५ ॥

ॐ नमः ॥ धीय नद वनाये ॥ श्री वीज नाद विन्दु द्वि नय गणिकला
 काच नय स्वचूय मान मर्दिम द्विज द्विज द्विज द्विज द्विज द्विज द्विज द्विज द्विज
 नना ॥ १ ॥ अज्ञान व्याकृता गन्ध मय विनय विद्यालस सत्यादय म् ॥ २ ॥
 श्री गणेश ॥ सर्व लो ॥ सर्व गण सहिते ॥ सर्व सुखी नमामि ॥ १ ॥ लज्ज वी
 ज स्वचूय विज गति व नद वी उया या ह्नि नय नानि त्यां ग मुग कि

विरुवन जननीं वालयनीं जगच्च । संसाधनं निदानं सकल लु
 लामयीं सच्चिदानन्द चूयां नृजा चूया यदी क विरुवन निमिनाज्ञा
 नरुनीं नमामि ॥ २ ॥ श्री वीज कामचूय धृग क मध न वलिया ग्नाः
 कृष्ण न् वन्दे सा स्वत्सवा जाद न निरु वयू या मोह नीं तिला की ।
 काञ्ची मञ्जरी चक्षु नाद मूक दल सत्स लु मालिक् नर्त न स्व नी

मिन्दुवकुं स नरुचनमिनी दीलमध्यांति नर्गं ॥ ३ ॥ वेवालीवीः
ज नूय जिनुवनऊठ नाष्ठा न विष्य सिनी त्वं त्वं गद्य वसू नूयाः
धृति स्ति न नूय दं गीय मा ना त्वं म व । मा न म्म द हि वृद्धिं म म स द सि
पुनि द्वन्दि स कौतुक कुं रुनी वा व स्य न न य नि वि वि ध य दं त्व
त्यदा भू ज मी उ ॥ ४ ॥ सो ४ ग कि ४ का यो जा न घ ट य ट य रु नी ह

रुह नी ४ सहा या मा या क वि ना द नूय रु ति य वि ल नी मूल नूना
त्वम व । क वि द्वा ष्ट य य रु म नि व रु ज नी दे रु नू ना त्व वि द्या वि
श्रा वि डा नं वृन्द क य रु नि ज ग नां म नि व रु द्वा वा ॥ ५ ॥ रु मा न
स न मी नु धृति म पि न गु नू गु द न व सू नू य मि थ्या ज्ञा ना न्ध का न
य नि न म नू दि नं या हि मा म कि ही न । मा रु डा व य ला रु य ध म गः

द्वयै १०० रुद्रि ४ यी शुमानं यत्नीयुगदिहृथेननवि विविधज
ने ४१० खलाहिनिर्वदं ॥७॥ डीका च डीस्वचूय ममदहदुविन
वाधिनानि शुवीडं मानस्वत्यादयद्वा द्वि नययनिसचवाथथरु
किलमै । ववालीत्ववल कीस्वमयिनिनिसू गावद्वाविष्ठा ४ स्म
वान् श्विहृनित्यं गनवां हृमिहृजननि त्वक टाक वृवृ ५४

॥१॥ श्रीकावे ४ श्रीस्वचूयविनचमयिधनं धान्यरुस्य ल्ययूकं
स्वर्गुमानिकुचला शक्तिविनयनं त्वत्यदावा मया ग्यं । विधातं
दहिमाकं मयिरुवदहनेद विदद हृमान् यामी ४ सवामाना
हृनकल वचथेभा कं मववयदि ॥८॥ कामाया निश्वरुधस्वच
विदशयमी सोवनशी शुवीडं गावद्वा वलीत्वं नहृजनवच

दत्तल्यदरुकिमीह । तत्त्यादास्तु यूर्गमददयसनसिउसनि
 अशोकविला । आतातलमोवन्धातुनिधिमलधियासुकिवन
 मूनीडा ॥ २ ॥ बुध्नु ॥ कामदवावियदमनगुनूरोविनगी
 अवीज तावल्हसुचयेद्यटिननूलनीत्ययिपनीस्मिमान् ॥
 विष्णुवर्धनसूक्तिमिन्मूकटमलेष्टालसत्यादयग्रायोगीन्दु

४६२

अथयाददयनखनगनिशानविशानिनाम् ॥ १० ॥ बुध्नु ॥ का
 म॥ सुने॥ विद्यद नलयूनवामनगाइवसेयूकेयदीजमनल
 दयिनववू ॥ सविदानन्दचूर्य । बालावरेचवीवैचिबुवलाजः
 ननीताविनीनीलवाली । त्वेगोनीवकालीसकलमनमयी
 त्वेमसाभाकदाजी ॥ ११ ॥ सो॥ काथावीजवाजसिबुवनजननी

४६३

शक्तिराशात्मवत्त्वयुक्तः ४ शक्तिरवयववत्त्ववद्विचलितुं त्वां वि
ना जायमानसः ४ वद्विचलितुं त्वां वि ४ कयद्विज ननि नवद्विचलितुं त्वां वि
माशानुनीचं गृह्णन् ४ सुखिच कायलयमविचलितुं त्वां वि
किच त्वद्विचलितुं त्वां वि ॥ १२ ॥ नवीकुं वाग्वारवां त्वमिह जउमतिः
धनवत्त्वयुका ॥ ११ ॥ माशः ४ काचूत्थ धनमृत्तवलि नद्विचलितुं त्वां वि

यश्च मां नाथदीनं । माशः न माहि नास्ति नवद्विचलितुं त्वां वि
ययावद्विचलितुं त्वां वि ४ काचूत्थ धनमृत्तवलि नद्विचलितुं त्वां वि
नामनी लु ४ ॥ १३ ॥ क्रीका नावीज द्रव्यसुवज ननि म नू ॥ १४ ॥
मधुयव शास्त्राकादुद्र स्य द्रुयी मदन नचूचयं वद्विचलितुं त्वां वि
कली । आशानसम नवका मृज कुरुचलस त्वद्रुयी यूवधना

वदाम्यत्रावचनं बुद्धि न गि विस्तरं या फ मी न लु चू य ॥ १४ ॥
ऊं का वा का व चू या त्व मि रु ग नि मू खी ऊं स्व चू या त्व भ व त्वं क
नि स्वं व का नि रु वि रु च क म ला डू न चू या त्व भ व । त्वं सि धि स्वं
व ज दि ४ स्म च वि यू म न स ४ सू ऊ रं मा रु य नी वि या त्वं मू कि
रु उ रं व ज ल ऊ नू ४ ख रु नी त्व भ व ॥ १५ ॥ श्री वी जं था स्व

चू य म चू वि यू म न सा म ध्या म ध्या सि ना त्वं मा न स्तु दृ द्धि त ग्मा द
म न य नि च सो या फ वा नृ द्धि म नां । ॐ श्री वी वा उ ग्मा लु य धि न म
न व च ४ स्व गू मा र्क क रु उ ४ सि धि म च वृ ल रु क य ॐ रु म नू न
व (गु ष्ठ म न रु ज नं ॥ १६ ॥ दू ज यि त्वा वि धा न न म रु नि यू च स्त
नृ चीं । ॐ द स्त गै य ठि वा उ क वी सा य ऊ मा प्र या नू ॥ १७ ॥ ॐ नि
नि व व कु म्बू ज वि नि र्ग न म क च न्द सा च स्त व चा ज ४ स मा य ४ । पु रं ॥

ॐ यमदमनाथनामः ॥ म
 म्नासाधन ॥ न ॥ कलेश्वरया
 नेकोशीनामः ॥ छिदमसूक्तमी
 कदयददि ॥ भिआददि
 भिरयाददि ॥ कवचददि
 भयददि ॥ अमुददि
 कामधमी ॥ रुगमानिनि
 निशक्ति ॥ हेनू ॥
 वद्विवासिनि ॥ वरुथयवि
 भिवद्वनि ॥ वचि न
 कनसूक्तदि ॥ निरथ
 नो ॥ यनाक ॥ विरुथ
 सर्वमज्ञ ॥ ल ॥ जालामानिनि
 विरु ॥ मरानिनि ॥
 यनमथयन ॥ यनमथयि
 मिश्रीसेमयि ॥ वद्यीसेमयि
 उशीशमयि ॥ स्मयामजामयि
 अगस्तमयि ॥ कोलनायनामयि
 धर्मचोयुमयि ॥ मरुकाभाथयि
 ॥ मयि

उरुं वा लयाकवा ॥ नेनवार्ध
 समवा ॥ मालामल ॥ लपुनयन
 दीपकनाथमयि
 युकाकनदवमयि
 नजादवमयि
 मनाऊदवमयि
 शीनामानन्दमयि
 अनिमामसिद्ध
 लद्विमामसिद्ध
 मरुजामसिद्ध
 ॐ ॥ विमिद्ध
 वजि ॥ वसिद्ध
 याकामासिद्ध
 रुकिमिद्ध
 ॐ ॥ सिद्ध
 याकिमिद्ध
 सर्वकामासिद्ध
 वादि
 मारुथयिनि
 कामादि

वैष्णवि
वा नादि
माक्षुति
वाम् ६७
मला लङ्गि
सर्वसं श्लोक्तिनि
सर्वविजावलि
सर्वो कर्षलि
सर्ववशी कर्षलि
सर्वो न्मादिनि
सर्वमला क ६७
सर्वस्वचनि
सर्ववीऊ
सर्वआन
सर्वत्रिख ६७
शुभा क्कमालनचक्र
स्वामिनि १ ।

यकट आभिनि
कामा कर्षलि
वृक्षो कर्षलि
अर्हका ना कर्षलि
गङ्गा कर्षलि
स्यार्ध कर्षलि
दुधा कर्षलि
नसा कर्षलि
गङ्गा कर्षलि
विरा कर्षलि
येयार्ध कर्षलि
स्मृत्ता कर्षलि
नामा कर्षलि
वीजा कर्षलि
आत्मा कर्षलि
अमृता कर्षलि
शनीना कर्षलि
सर्वसाधु न कर्षलि
स्वामिनि ॥ २ ॥

गुह्यआनिनि
अनङ्गकसम्
अनङ्गभस्वत्
अनङ्गमदम्
अनङ्गमदनीलम्
अनङ्गवत्
अनङ्गवनिनि
अनङ्गकम्
अनङ्गमानिनि
सर्वसङ्गाननकस्या
निनि ३
युक्तननआनिनि
सर्वसङ्गानिनि
सर्वविद्यानिनि
सर्वकर्मनिनि
सर्वद्रोदिनिनि
सर्वसम्भानिनि
सर्वसम्भानिनि

सर्वद्रोदिनि
सर्ववसिकनि
सर्वनष्टिनि
सर्वान्नादिनि
सर्वार्थसाधिनि
सर्वसंयक्तिनि
सर्वमन्त्रमणि
सर्वद्रोदकयकनि
सर्वशोकाग्निदायक
चक्रस्यानिनि ॥५॥
सर्वदायआनिनि
सर्वसिद्धियुद
सर्वसंययुद
सर्वत्रियकनि
सर्वसंगलकादिनि
सर्वकामयुद
सर्वद्रोदिविनि
सर्वसंययुदमनि

[illegible][illegible]